MAHARASHTRA STATE COUNCIL OF EXAMINATION, PUNE

Government Commercial Certificate Examination

5 JULY, 2018

[Time : 09-00]

(Total Marks for Sections I and II : 100)

HINDI TYPEWRITING

(40 Words Per Minute)

SECTION - II

(Time Allowed : 7 Minute)

हिंदी टंकलेखन

(४० शब्द प्रति मिनट)

विभाग - २

(समय : ७ मिनट)

सूचना : निम्नांकित गद्यखंड को दोहरे अंतर में टंकलिखित करें । गद्यखंड को दुबारा टंकलिखित न करें। बायीं ओर १५ स्पेस का हाशिया (मार्जिन) छोडिए ।

[अंक : ४०]

मेरी खिडकी के सामने एक पेड़ खडा है । मेरी ही तरह साधारण देह है उसकी, पर जब उस पर फूल आते हैं तो मुझे ऐसा लगता है, जैसे आकाश से बरसी देवताओं की हँसी का अंबार हो । चारों ओर हलके लाल रंग के फूल, यहाँ तक कि पत्ते भी ढक - से जाते हैं ।

मैं अपने पलंग पर बैठा उसे घंटों देखता रहता हूँ । पर मन नहीं भरता । मैंने अक्सर सोचा है कि काली मिट्टी में जन्में कुरूप तन पर आश्रित इस पेड़ में ऐसे कोमल पत्ते और इतने सुंदर फूलों की सृष्टि विश्व का कितना बड़ा चमत्कार है । सोचते - सोचते ही मैं कई बार उठकर अपनी भावुकता के आवेश में उस पेड़ से जा लिपटा हूँ और मुझे ऐसा आनंद आया है, मानों मैं अपने किसी मित्र से मिल रहा हूँ ।

शास्त्र और विज्ञान दोनों वृक्षों को सजीव मानते हैं । मेरा भी इसमें यों ही विश्वास था, पर १९४२ की जेलयात्रा में अपने साथियों के साथ जब मैं डाकू-वार्ड में बंद किया गया तो कुछ ही दिन पहले अपनी पत्नी की मृत्यु के कारण मेरे मन पर छाई शून्यता ओर भी घनी हो गई । शून्यता के इसी वातावरण में एक दिन चांदनी रात में अचानक चौक में खडे पेड़ की जीवनशक्ति का मुझे साक्षात अनुभव हुआ और मुझपर से शून्यता का वातावरण कुछ हट-सा गया । तब से वृक्षों के साथ मेरी आत्मीयता ओर भी गहरी हो गई ।

उस दिन भी मैं कुछ ऐसे ही मूड में था कि उस पेड़ के पास पहुँच गया । संध्या का समय था और सूर्य की हलकी किरणों से वह और भी भव्य हो रहा था । मैंने कहाँ मित्र आज तो तुम अपनी हँसी में आप ही लिपटे जा रहे हो, क्या बात है पेड़ बेचारा क्या बोलता, पर तभी कुछ फूल नीचे आए ।